पंतनगर के प्रसिद्ध किसान मेले का शुभारम्भ

पंतनगर। 9 मार्च, 2011। पंतनगर विश्वविद्यालय के प्रसिद्ध किसान मेले का आज शुभारम्भ हुआ। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के कृषि विज्ञान केन्द्र के उत्तरी क्षेत्र कानपुर के क्षेत्रीय समन्वयक, डा. ए.के. सिंह ने मुख्य अतिथि के रूप में रिबन काटकर मेले का उद्‌घाटन किया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के कुलपति, डा. बी.एस. बिष्ट के साथ–साथ विश्वविद्यालय की प्रबंध परिषद के सदस्य, डा. एस.के. भदूला, डा. आर.एल. अरोड़ा, श्री कुन्दन सिंह पंवार तथा श्री राजेश शुक्ला भी उपस्थित थे। उद्‌घाटन के पश्चात कुलपति, डा. बिष्ट ने मुख्य अतिथि व अन्य अतिथियों को गाड़ी में बैठाकर मेले का भ्रमण कराया। डा. भदूला ने मेला प्रांगण में लगी उद्यान प्रदर्शनी का उद्‌घाटन भी किया। सभी अतिथियों ने प्रदर्शनी में रखे फल, फूल, सब्जी व अन्य प्रविष्टियों की काफी सराहना की।

गांधी हाल में आयोजित उद्‌घाटन समारोह में बोलते हुए मुख्य अतिथि, डा. ए.के. सिंह ने कहा कि देश के उत्तर पूर्वी क्षेत्र का दूसरी हरित क्रांति में महत्वपूर्ण योगदान होगा जिसको देखते हुए पंतनगर विश्वविद्यालय की दूसरी हरित क्रांति में भी महत्वपूर्ण भूमिका होगी। उन्होंने उत्तराखण्ड में बड़े पॉलीहाउस बनाये जाने के लिए राज्य सरकार द्वारा अधिक निवेश किये जाने की आवश्यकता बतायी। साथ ही इस प्रदेश में महिलाओं के श्रम को कम करने के लिए औजार दिये जाने तथा मॉस व दूध का उत्पादन बढ़ाने की ओर अधिक ध्यान दिये जाने के लिए भी कहा। डा. सिंह ने बताया कि 12वीं पंचवर्षीय योजना में देश के अग्रणी किसानों को विदेश भेजकर नई तकनीकों की जानकारी दी जायेगी। उन्होंने भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा प्रगतिशील किसानों को पुरस्कृत किये जाने के बारे में भी बताया। डा. सिंह ने दलहनी फसलों का उत्पादन बढ़ाने हेतु गन्ने के साथ मूंग, उड़द एवं लोबिया की कम अवधि वाली प्रजातियाँ की फसल भी लिये जाने की आवश्यकता बतायी जिससे उत्पादकता के साथ–साथ जमीन की उर्वरता में भी बढ़ोत्तरी होगी। उत्तराखण्ड एवं अन्य प्रदेशों में बोये जाने वाले मोटे अनाजों को उन्होंने भविष्य की फसल बताते हुए उनकी क्षमता अभी से जानने के लिए वैज्ञानिकों से कहा।

उद्‌घाटन समारोह की अध्यक्षता कर रहे पंतनगर विश्वविद्यालय के कुलपति, डा. बी.एस. बिष्ट ने संरक्षित खेती को आवश्यक बताते हुए किसानों से मेले में इससे सम्बन्धित मशीनों एवं जानकारियों को प्राप्त करने के लिए कहा, ताकि वे अपने संसाधनों के कम प्रयोग से खर्च में कमी करते हुए अधिक उत्पादन प्राप्त कर सकें। उन्होंने समन्वित कृषि का प्रदेश में विस्तार के साथ–साथ पर्यावरण हितैषी कृषि को बढ़ावा देने के लिए विश्वविद्यालय द्वारा अधिक प्रयास किये जाने की बात भी कही। डा. बिष्ट ने उपस्थित लोगों को विश्वविद्यालय की हाल की उपलब्धियों के बारे में भी बताया तथा विश्वविद्यालय द्वारा किसानों व विद्यार्थियों का विशेष ध्यान रखने की बात भी कही।

इस अवसर पर विश्वविद्यालय की प्रबंध परिषद के सदस्य, डा. भदूला, श्री पंवार, श्री शुक्ला एवं डा. अरोड़ा ने भी अपने विचार प्रकट किये तथा किसानों व वैज्ञानिकों के आपसी सहयोग को बढ़ाने, उत्पादन बढ़ाने के साथ–साथ उत्तराखण्ड की जलवायु को बनाये रखने, पर्वतीय कृषि को लाभकारी बनाने, गर्मी के धान में सूक्ष्म सिंचाई का प्रयोग करने, सघन बागवानी अपनाने तथा प्रदेश में विभिन्न क्षेत्रों के अनुसार उपयुक्त फसल व फल की खेती अपनाने के बारे में कहा।

कार्यक्रम के प्रारम्भ में निदेशक प्रसार, डा. वाई.पी.एस. डबास ने सभी मंचासीन अतिथियों व उपस्थित किसानों, वैज्ञानिकों, अधिकारियों, कर्मचारियों, विद्यार्थियों व अन्य सभी का स्वागत करते हुए मेले में आयोजित होने वाले विभिन्न कार्यक्रमों की जानकारी दी। कार्यक्रम के अंत में कार्यवाहक निदेशक शोध, डा. महेश कुमार ने सभी का धन्यवाद किया। उद्‌घाटन समारोह में उत्तराखण्ड के जनपद से चयनित प्रगतिशील कृषकों को पुरस्कृत भी किया गया व विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा लिखित प्रकाशनों का विमोचन भी किया गया।

ई.मेल. चित्र सं.–1. अखिल भारतीय किसान मेले का फीता काटकर उद्घाटन करते हुए कुलपति, डा. बी.एस. बिष्ट, मुख्य अतिथि, डा. ए.के. सिंह एवं प्रबंध परिषद के सदस्य।

ई.मेल. चित्र सं.–2. किसान मेले में उद्यान प्रदर्शनी का उद्घाटन करने के बाद प्रविष्टियों का अवलोकन करते मुख्य अतिथि, डा. ए.के. सिंह एवं कुलपति, डा. बी.एस. बिष्ट।

ई.मेल. चित्र सं.–3. गांधी हाल में आयोजित किसान मेले के उद्घाटन समारोह में मध्य में मंचासीन कुलपति, डा. बी.एस. बिष्ट एवं क्षेत्रीय समन्वयक, डा. ए.के. सिंह।

ई.मेल. चित्र सं.–4. उद्घाटन समारोह में उत्तराखण्ड के जनपदों से चयनित प्रगतिशील कृषकों को पुरस्कृत करते डा. बी.एस. बिष्ट एवं डा. ए.के. सिंह।